व्यवसाय अध्ययन

भाग 1

प्रबंध के सिद्धांत और कार्य

कक्षा 12 के लिए पाठ्यपुस्तक

NBCampus

12115

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण

अप्रैल 2007 वैशाख 1929

पुर्नमुद्रण

फरवरी 2009 माघ 1930
जनवरी 2010 माघ 1931
जनवरी 2011 माघ 1932
अप्रैल 2019 चैत्र 1941

PD 5T RSP

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2007

₹ ??.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा शगुन ऑफ़सेट प्रैस, एफ-476, सेक्टर-63, नोएडा-201301 (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।

ISBN 81-7450-720-5

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुन: प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन सी ई आर टी के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बैंगलुरु 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	:	*एम. सिराज अनवर*
मुख्य संपादक	:	*श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी	:	*अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक	:	*अबिनाश कुल्लू*
संपादक	:	*मरियम बारा*
उत्पादन सहायक	:	*सुनिल कुमार*

आवरण
श्वेता राव

सज्जा एवं चित्रांकन
अश्वनी त्यागी

NBCampus

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास हैं। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभवों पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

ये उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है जितना वार्षिक कैलेंडर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव उत्पन्न करने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और सार्थक बनाने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

एन. सी. ई. आर. टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तक सलाहकार समूह के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर हरि वासुदेवन और व्यवसायिक अध्ययन पाठ्यपुस्तक समिति के मुख्य

NBCampus

सलाहकार, प्रोफ़ेसर डी. पी. एस. वर्मा (सेवानिवृत), दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स, दिल्ली विश्वविद्यालय और डॉ. जी. एल. टायल, प्रवाचक, रामजस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, के विशेष आभारी हैं। इस पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान दिया; इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी. पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनीटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी. टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी, जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्

नयी दिल्ली
20 नवंबर 2006

NBCampus

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तक सलाहकार समिति

हरि वासुदेवन, *प्रोफ़ेसर,* इतिहास विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकत्ता

मुख्य सलाहकार

डी. पी. एस. वर्मा, *प्रोफ़ेसर (सेवानिवृत्त)*, वाणिज्य विभाग, अर्थशास्त्र दिल्ली विद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

सलाहकार

जी. एल. टायल, *प्रवाचक,* रामजस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

सदस्य

आनंद सक्सेना, *प्रवाचक,* दीन दयाल उपाध्याय कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

देवेन्द्र के. वेद, *प्रोफ़ेसर,* सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

एम. एम. गोयल, *प्रवाचक,* पी.जी. डी.ए.वी. कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

नरसिम्हा मूर्ति, *प्रधानाचार्य,* विश्वविद्यालय स्नाकोत्तर कॉलेज, सुबेदरी, अनम कोंडा, जिला वारंगल, आंध्र प्रदेश

पूजा दसानी, *पी. जी. टी. वाणिज्य,* कॉनवेंट ऑफ जीसेस एंड मैरी, गोल डाकखाना, नयी दिल्ली

आर. बी. सोलंकी, *प्रधानाचार्य,* बी. आर. अंबेडकर कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

रुचि कक्कड़, *प्रवक्ता,* आचार्य नरेन्द्र देव कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

श्रुति बोध अग्रवाल, *उप प्रधानाचार्या,* राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय, किशनगंज दिल्ली

सुमति वर्मा, *प्रवाचक,* श्री अरबिंदों कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

वाई. वी. रेड्डी, *प्रवाचक,* वाणिज्य विभाग, गोवा विश्वविद्यालय, गोवा

हिंदी अनुवाद

एस. के बंसल, *पी.जी.टी.* वाणिज्य (सेवानिवृत), कमर्शियल सीनियर सेकंडरी स्कूल, दरियागंज, नयी दिल्ली

एल.आर. पाठक, *शिक्षा अधिकारी* (सेवानिवृत), शिक्षा निदेशालय, दिल्ली प्रशासन, दिल्ली

सीमा श्रीवास्तव, *प्रवाचक,* डी.आई.ई.टी. (एस.सी.ई.आर.टी), मोती बाग, नयी दिल्ली

सदस्य समन्वयक

मीनू नंद्राजोग, *प्रवाचक,* सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

NBCampus

अध्यापकों के लिए

यह पाठ्यपुस्तक व्यावसायिक वातावरण की एक अच्छी जानकारी देने की अपेक्षा करती है। एक प्रबन्धक को व्यवसाय की जटिल, गतिशील स्थितियों का विश्लेषण करना पड़ता है। विषय–वस्तु को अधिक समृद्ध बनाने के लिए व्यावसायिक पत्र–पत्रिकाओं और लेखों के उद्धरणों को अतिरिक्त रूप से कोष्ठकों में जोड़ा गया है। इससे विद्यार्थियों को प्रोत्साहन मिलता है कि वें व्यवसाय की प्रतिक्रियाओं का अवलोकन करें एवं स्वयं खोज करने का प्रयास करें कि व्यावसायिक संगठनों में क्या हो रहा है। यह भी अपेक्षा की जाती है कि इस दौरान वे पुस्तकालय, समाचार-पत्रों, व्यवसायोन्मुख दूरदर्शन कार्यक्रमों और इन्टरनेट के द्वारा आधुनिक जानकारी प्राप्त करेंगे। विभिन्न प्रकार के प्रश्न एवं केस समस्याएँ प्रस्तावित की गई हैं जिससे वे विषय के ज्ञान प्रयोग द्वारा वास्तविक व्यावसायिक स्थितियों को जान सकें।

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् इस पाठ्यपुस्तक के अभ्यासों, क्रियाकलापों और परियोजनाओं के निर्माण में अपना बहुमूल्य योगदान देने वाले निम्नलिखित लोगों के प्रति अपना आभार व्यक्त करती है। सीमा श्रीवास्तव, *प्रवक्ता*, सेवा विभाग, डी.आई.ई.टी. मोती बाग, नयी दिल्ली; रजनी रावल, *उप प्रधानाचार्या*, राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय, पश्चिम विहार, दिल्ली; श्रुति बोध अग्रवाल, *उप प्रधानाचार्या*, राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय, किशन गंज, दिल्ली; मंजू चावला, *पी.जी.टी. वाणिज्य*, राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय, सूरज मल विहार, दिल्ली; शिवानी नागराथ, *पी.जी.टी. वाणिज्य*, समर फिल्ड स्कूल, कैलाश कॉलोनी, नयी दिल्ली तथा अनुवाद का पुर्ननिरीक्षण करने के लिए एम.एम. वर्मा, *प्रवाचक* (सेवानिवृत) श्रद्धानंद कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली के भी हम आभारी हैं।

पुस्तक के विकास में सहयोग के लिए हम सविता सिन्हा, *प्रोफ़ेसर एवं विभागाध्यक्ष*, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग, एन. सी. ई. आर. टी. के प्रति विशेष रूप से आभार व्यक्त करते हैं, जिन्होंने हमें हर संभव सहयोग दिया।

पुस्तक के विकास के विभिन्न चरणों में सहयोग के लिए प्रभारी कंप्यूटर कक्ष, दिनेश कुमार; *डी.टी.पी. ऑपरेटर*, विजय कौशल, अर्चना गुप्ता; *कॉपी एडीटर*, नौशाद अहमद, *प्रूफ़ रीडर*, अचल कुमार के भी हम आभारी हैं। प्रकाशन विभाग द्वारा हमें पूर्ण सहयोग एवं सुविधाएँ प्राप्त हुईं, इसके लिए हम उनका आभार व्यक्त करते हैं।

हम उन सभी वाणिज्य शिक्षकों के भी आभारी हैं, जिन्होंने इस पाठ्यपुस्तक की क्यू.आर.कोड की अतिरिक्त पाठ्य सामग्री तैयार करने में अपना योगदान दिया है।

NBCampus

विषय-सूची

	आमुख	*iii*
अध्याय 1	प्रबंध की प्रकृति एवं महत्त्व	1–28
अध्याय 2	प्रबंध के सिद्धांत	29–66
अध्याय 3	व्यावसायिक पर्यावरण	67–89
अध्याय 4	नियोजन	90–108
अध्याय 5	संगठन	109–139
अध्याय 6	नियुक्तिकरण	140–175
अध्याय 7	निर्देशन	176–215
अध्याय 8	नियंत्रण	216–236

NBCampus

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1]**[संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य]** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2]**[राष्ट्र की एकता और अखंडता]** सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''राष्ट्र की एकता'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।

NBCampus

12115CH01

प्रबंध की प्रकृति एवं महत्त्व

1
अध्याय

टाटा स्टील में प्रबंधन

1868 में जमशेदजी नुसरवानजी द्वारा स्थापित टाटा समूह एक वैश्विक व्यापार समूह है जो 5 महाद्वीपों के 100 देशों में स्थापित है। मूल्यों, नवाचार और उद्यमिता की मजबूत भावना, एक विरासत के रूप में आज तक टाटा कंपनियों का मार्गदर्शन कर रही है।

जमशेद जी का मानना था कि संतुष्ट श्रमिक संतुष्ट श्रमिकों को बनाते हैं और इसी सिद्धांत पर उन्होंने अपने सभी श्रमिकों को ग्रैच्युटी, भविष्य निधि का सदैव भुगतान किया। पूरे जमशेदपुर शहर की योजना बनाने और निर्माण विवरण तैयार करने पर उनका प्रबंधन कौशल स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है। एक शताब्दी के लिए व्यापार को नियंत्रित करने वाले मूल्यों और सिद्धांतों को टाटा आचार संहिता (टी.सी.ओ.सी) में समाहित किया गया है।

इस्पात और ऑटोमोबाइल के शुरुआती दौर से नवीनतम प्रौद्योगिकियों में बराबर रहने तक, टाटा समूह में आज 29 सार्वजनिक रूप से सूचीबद्ध टाटा उद्यम हैं, जिनमें टाटा स्टील, टाटा मोटर्स, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज, टाटा पावर, टाटा केमिकल्स, टाटा ग्लोबल बेवरेज, टाटा टेलीसर्विसेज, टाइटन, टाटा कम्युनिकेशंस और भारतीय होटल शामिल हैं। समूह का संयुक्त बाजार पूंजीकरण लगभग 103.51 अरब डॉलर (2016-17) है।

टाटा की सामाजिक दायित्व की भावना मजबूत है। वे समुदाय के लिए आर्थिक समृद्धि, पर्यावरणीय जिम्मेदारी और सामाजिक लाभ को संतुलित करते हैं। भारत में, वे 'ओडिशा' के साथ प्रगति में भागीदार हैं और विकास की इस यात्रा में अपने हितधारकों को आगे बढ़ाने में विश्वास करते हैं। टाटा स्टील थाईलैंड उन शुरूआती 30 कंपनियों में से एक है जो यूनिसेफ के कार्यक्रम "द चिल्ड्रेन सस्टेनेबिलिटी फोरम" में शामिल है ताकि बच्चों के अधिकारों की रक्षा को प्रतिबद्ध किया जा सके। टाटा स्टील यूरोप का सामुदायिक साझेदारी कार्यक्रम— 'फ्यूचर जेनरेशंस', जिसके उप-विषय हैं— शिक्षा, पर्यावरण, स्वास्थ्य

अधिगम उद्देश्य

इस अध्याय के अध्ययन के पश्चात् आप–

- प्रबंध की प्रकृति एवं संगठन में इसके महत्त्व को समझा सकेंगे;
- प्रबंध की प्रकृति को कला, विज्ञान एवं पेशे के रूप में समझा सकेंगे;
- प्रबंध के विभिन्न कार्यों का वर्णन कर सकेंगे एवं
- समन्वय की प्रकृति एवं इसके महत्त्व को समझ सकेंगे।

NBCampus

और कल्याण ब्रिटेन भर में काम करता है, साथ ही वित्त और व्यावसायिक स्थलों के साथ छोटे एवं मध्यम व्यवसायों को नौकरी और संपत्ति निर्माण में सहायता करता है।

वे दोनों तरह से जलवायु परिवर्तन को संबोधित करने में एक रचनात्मक भूमिका निभाते हैं — कार्बन पदचिह्न को कम करके और उच्च प्रदर्शन स्टील्स बनाकर जो ईंधन-कुशल वाहनों और ऊर्जा-कुशल इमारतों का कारण बनते हैं। उनकी पर्यावरण प्रबंधन प्रणाली आईएसओ 14001 मानकों को उनकी सभी मुख्य विनिर्माण स्थलों पर देखा जा सकता है।

ठोस और स्पष्ट व्यापार सिद्धांतों की परंपरा से निर्मित, टाटा समूह विश्वास एवं पारदर्शिता की नींव पर खड़ा है। ऐसे बड़े उद्यमों का निर्माण, लाभप्रद बनाए रखने और उन्हें चलाने के लिए केवल सभी स्तरों पर प्रभावी और कुशल प्रबंधन और समन्वय के माध्यम से संभव है।

स्रोत–www.tatasteel.com; जून, 2018 के अनुसार।

विषय प्रवेश

उपरोक्त वस्तुस्थिति एक ऐसे सफल संगठन का उदाहरण है जो देश की शीर्षस्थ कंपनियों में से एक है। यह अपनी प्रबंध की गुणवत्ता के परिणामस्वरूप शीर्ष पर पहुँची है। प्रबंध की आवश्यकता हर प्रकार के संगठनों में होती है फिर भले ही वह कंप्यूटर के विनिर्माता हैं अथवा हस्तशिल्प के उपभोक्ता की वस्तुओं में व्यापार करते हैं या फिर केश सज्जा सेवाएँ प्रदान करते हैं एवं वह गैर व्यावसायिक संगठन भी हो सकते हैं। आइए एक उदाहरण और लें–

स्मिता राय एक 38 वर्षीय उद्यमी हैं जो एक ग्रामीण जिले नामची, दक्षिण सिक्किम में पली-बढ़ी हैं। वह शिल्पकला, विशेष रूप से मोम कला में बहुत अच्छी थीं। उन्हें मोमबत्तियाँ बनाना पसंद था। अक्सर वह मोम के खिलौने बनातीं और उन्हें अपने दोस्तों और जानकारों को उपहार स्वरूप देती थीं। स्मिता अपने जिले में महिलाओं की परिस्थितियों से कभी खुश नहीं थीं क्योंकि उनमें से ज़्यादातर गरीब और बेरोज़गार थीं। इसलिए उन्होंने इन समस्याओं को हल करने के लिए कुछ करने की योजना बनाई। उन्हें पता था कि आजीविका के लिए कौशल प्रदान करना आवश्यक है लेकिन यह नहीं पता था कि उन्हें कैसे कार्यान्वित किया जाए।

वह अगस्त 2012 में अभिषेक लामा से मिलीं। अभिषेक एन.ई.डी.एफ.आई के नामची शाखा के प्रबंधक थे। स्मिता ने अभिषेक से कौशल विकास कार्यक्रमों और गतिविधियों की जानकारी प्राप्त की। स्मिता ने सोचा कि उन्हें

NBCampus